ऐसे किसी आत्मतत्त्व का अस्तित्व नहीं है, जो चेतना का स्रोत हो। इस प्रकार वस्तुतः देह को ही आत्मा मान लिया जाता है। इस ज्ञान के अनुसार तो चेतना भी अनित्य सिद्ध हो जाती है। अथवा, कोई जीवात्मा नहीं है; केवल एक सर्वव्यापी आत्मा है, जो ज्ञानमय है, जबकि देह अविद्या का अनित्य प्रकाशमात्र है। यह भी कहा जाता है कि इस देह से परे कोई जीवात्मा अथवा परमात्मा नहीं है। ऐसी सब धारणाएँ रजोगुण से उत्पन्न मानी जाती हैं।

यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहैतुकम्।
अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम्।।२२।।

यत्=जो; **तु**=परन्तु; **कृत्स्नवत्**=पूर्ण रूप से; **एकस्मिन्**=एक में; **कार्ये**=कर्म में; **सक्तम्**=आसक्त है; **अहैतुकम्**=हेतुरहित; **अतत्त्वार्थवत्**=तत्त्व से रहित; **अल्पम्** **च**=तुच्छ भी; **तत्**=वह; **तामसम्**=तामस; **उदाहृतम्**=कहा गया है।

अनुवाद

जिस ज्ञान के द्वारा तत्त्व के बिना सदा एक ही कार्य में पूर्ण रूप से आसक्त रहता है और जो अति तुच्छ है, वह तामस कहा गया है।।२२।।

तात्पर्य

सामान्य मनुष्य का 'ज्ञान' सदा अज्ञान अथवा अंधकार में है, क्योंकि बद्धावस्था में जीव पर जन्म से ही तमोगुण छाया रहता है। जो आचार्यों अथवा शास्त्रों की आज्ञा के अनुसार ज्ञान का विकास नहीं करता, उसका ज्ञान देह तक सीमित रहता है। वह शास्त्र-विधि के अनुसार आचरण करने की चिन्ता नहीं करता। उसके लिए धन ईश्वर है और शरीर की आवश्यकता-पूर्ति ही ज्ञान है। ऐसे ज्ञान का परतत्त्व से कुछ सम्बन्ध नहीं। यह प्रायः सोना, खाना, मैथुन और भय—सामान्य पशुओं के ज्ञान जैसा है। ऐसे ज्ञान को तमोगुण से उत्पन्न बताया गया है। भाव यह है कि इस देह से परे आत्मा का ज्ञान सात्त्विक है; लौकिक तर्क और मनोधर्म के आधार पर अनेक मतों को उपस्थित करने वाला ज्ञान राजस है तथा केवल देह को सुखी रखने सम्बन्धी ज्ञान तामस है।

नियतं संगरहितमरागद्वेषतः कृतम्।
अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते।।२३।।

नियतम्=शास्त्रविहित; **संगरहितम्**=आसक्ति से रहित; **अरागद्वेषतः**=राग-द्वेष के बिना; **कृतम्**=किया; **अफलप्रेप्सुना**=फल को न चाहने वाले द्वारा; **कर्म**=कर्म; **यत्**=जो; **तत्**=वह; **सात्त्विकम्**=सात्त्विक; **उच्यते**=कहा जाता है।

अनुवाद

जो कर्म शास्त्रविहित कर्तव्य के अनुसार, कर्तापन के अभिमान और राग-द्वेष के बिना, फल को न चाहने वाले द्वारा किया गया हो, वह सात्त्विक कहा जाता है।।२३।।